ISSN (Online) : 2348 - 2001

International Refereed Journal of Reviews and Research

Volume 7 Issue 2 March 2019

International Manuscript ID : 23482001V7I2032019-16

(Approved and Registered with Govt. of India)

मुंशी प्रेमचंद: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कीर्ति खत्री

शोध छात्रा

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

उत्तर प्रदेश

डॉ० वंदना रानी गुप्ता

प्रोफेसर

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय

उत्तर प्रदेश

अगर भारतीय साहित्य को पढ़ा और प्रेमचंद से अछूते रहे यानी समुद्र-तट तक गए और पानी ही न देखा। प्रेमचंद साहित्य की धारा के रस हैं जिनके बिना उसके पान में कोई स्वाद नहीं रह जाता। गोदान, गबन, निर्मला, कर्मभूमि, मानसरोवर जैसी किताबें देने वाले प्रेमचंद न सिर्फ़ हिंदी बल्कि उर्दू में भी लेखन किया करते थे। ऐसे महान व्यक्तित्व सदैव समाज के उत्थान और प्रगति की सोचते हैं। पढ़ें मुंशी प्रेमचंद के विचार विजयी व्यक्ति स्वभाव से, बहिर्मुखी होता है। पराजय व्यक्ति को अन्तर्मुखी बनाती है। हिंदी के उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस के लमही गांव में हुआ था। प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य के खजाने को लगभग एक दर्जन उपन्यास और करीब 250 लघु-कथाओं से भरा है। प्रेमचंद के बचपन का नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। आज मुंशी प्रेमचंद के बिना हिंदी की कल्पना भी करना मुश्किल है, लेकिन लेखन की शुरुआत प्रेमचंद ने उर्दू से की थी। उन्होंने पहला उपन्यास उर्दू में लिखा था। उन्होंने 'सोज-ए-वतन' नाम की कहानी संग्रह भी छापी थी जो काफी लोकप्रिय हुई। मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं के बारे में तो काफी पढ़ा और लिखा गया है। लेकिन उनके निजी जीवन के बारे में लोगों को बहुत कुछ मालूम नहीं है। उनके जीवन के

ISSN (Online) : 2348 - 2001
International Refereed Journal of Reviews and Research
Volume 7 Issue 2 March 2019
International Manuscript ID : 23482001V7I2032019-16
(Approved and Registered with Govt. of India)

अनछुए पहलू को उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने अपनी किताब 'प्रेमचंद: घर में' उजागर किया है। सन् 1924 में 'माधुरी' ऑफिस की कुछ किताबें बोर्ड मंजूर कराने बेदार साहब के यहां प्रयाग गए थे। बेदार साहब खुद बड़े शराबी थे। उन्होंने खुद भी पिया और मुंशी प्रेमचंद को भी पिला दिया। वह लेट से घर आए तो दरवाजा बच्चों ने खेला। बच्चों ने मां को पहले बता दिया था कि पिता जी पीकर आए हैं। यह सुनते ही शिवरानी देवी जान-बूझकर सो गईं। सुबह उन्होंने पत्नी से शिकायत की तो पत्नी ने कहा कि आप शराब पीकर आए थे, इसी वजह से दरवाजा नहीं खोला। अगर दोबारा भी पीकर आएंगे तो मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी। उस पर उन्होंने आगे से नहीं पीने का वादा किया। लेकिन एक बार फिर पीकर आगए। पत्नी शिवरानी देवी ने फिर से दरवाजा नहीं खोला। दूसरी बार के बाद फिर उन्होंने कभी शराब नहीं पी। जब हिंदू सभा वाले हो गए नाराज उन्होंने एक लेख लिखा था जिस पर हिंदू सभा वाले नाराज हो गए थे। इस पर उनकी पत्नी ने उनसे पूछा कि आप ऐसा लिखते ही क्यों है कि लोग भड़क जाते हैं और आपके दुश्मन बन जाते हैं। इस पर उन्होंने जवाब दिया, 'लेखक को पब्लिक और गर्वनमेंट अपना गुलाम समझती है। आखिर लेखक भी कोई चीज़ है। वह सभी की मर्जी के मुताबिक लिखे तो लेखक कैसा? लेखक का अस्तित्व है। गवर्नमेंट जेल में डालती है, पब्लिक मारने की धमकी देती है, इससे लेखक डर जाये और लिखना बन्द कर दे?' अंधविश्वास के खिलाफ एक बार किसी बात पर उनकी पत्नी ने जब भगवान का नाम लिया तो उन्होंने कहा कि भगवान मन का भूत है, जो इंसान को कमजोर कर देता है। स्वावलंबी मनुष्य ही की दुनिया है। अंधविश्वास में पड़ने से तो रही-सही अक्ल भी चली जाती है। इस पर उनकी पत्नी ने कहा, गांधीजी तो दिन-रात 'ईश्वर-ईश्वर' चिल्लाते रहते हैं। जवाब में प्रेमचंद बोले, वह एक प्रतीक भर है। वह देख रहे हैं कि जनता अभी बहुत सचेत नहीं है। और फिर तो जनता सदियों से भगवान पर विश्वास किए चली आ रही है। जनता एकाएक अपने विचार बदल नहीं सकती है। अगर एकाएक जनता को कोई भगवान से अलग करना चाहे तो यह संभव भी नहीं। इसी से वे भी शायद भगवान का ही सहारा लेकर चल रहे हैं।

ISSN (Online) : 2348 - 2001
International Refereed Journal of Reviews and Research
Volume 7 Issue 2 March 2019
International Manuscript ID : 23482001V7I2032019-16
(Approved and Registered with Govt. of India)

प्रेमचंद की कृतियां भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और न ही प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रुसी साहित्यकार थे। लेकिन होते-होते उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है।

मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिलेख है। यहां उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहां उनकी एक आवक्षप्रतिमा भी है। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे। उनके ही बेटे अमृत राय ने 'क़लम का सिपाही' नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियां लोकप्रिय हुई हैं।

प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अदभूत कृतियां लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा। अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का

ISSN (Online) : 2348 - 2001
International Refereed Journal of Reviews and Research
Volume 7 Issue 2 March 2019
International Manuscript ID : 23482001V7I2032019-16
(Approved and Registered with Govt. of India)

संपादन किया और अपना साहित्य-सृजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ।

मारे स्कूलों और कॉलेजों में जिस तत्परता से फीस वसूल की जाती है, शायद मालगुजारी भी उतनी सख्ती से नहीं वसूल की जाती। महीने में एक दिन नियत कर दिया जाता है। उस दिन फीस का दाखिला होना अनिवार्य है। या तो फीस दीजिए, या नाम कटवाइए, या जब तक फीस न दाखिल हो, रोज कुछ जुर्माना दीजिए। कहीं-कहीं ऐसा भी नियम है कि उसी दिन फीस दुगुनी कर दी जाती है, और किसी दूसरी तारीख को दुगुनी फीस न दी तो नाम कट जाता है। काशी के क्वीन्स कॉलेज में यही नियम था। सातवीं तारीख को फीस न दो, तो इक्कीसवीं तारीख को दुगुनी फीस देनी पड़ती थी, या नाम कट जाता था। ऐसे कठोर नियमों का उद्देश्य इसके सिवा और क्या हो सकता था, कि गरीबों के लड़के स्कूल छोड़कर भाग जाएं- वही हृदयहीन दफ्तरी शासन, जो अन्य विभागों में है, हमारे शिक्षालयों में भी है। वह किसी के साथ रियायत नहीं करता। चाहे जहां से लाओ, कर्ज लो, गहने गिरवी रखो, लोटा-थाली बेचो, चोरी करो, मगर फीस जरूर दो, नहीं दूनी फीस देनी पड़ेगी, या नाम कट जाएगा। जमीन और जायदाद के कर वसूल करने में भी कुछ रियायत की जाती है। हमारे शिक्षालयों में नर्मी को घुसने ही नहीं दिया जाता। वहां स्थायी रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है। कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय। देर में आइए तो जुर्माना न आइए तो जुर्माना सबक न याद हो तो जुर्माना किताबें न खरीद सकिए तो जुर्माना कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बांधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देने वाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा बेच देने वाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है-

ISSN (Online) : 2348 - 2001

International Refereed Journal of Reviews and Research

Volume 7 Issue 2 March 2019

International Manuscript ID : 23482001V7I2032019-16

(Approved and Registered with Govt. of India)

आज वही वसूली की तारीख है। अधयापकों की मेजों पर रुपयों के ढेर लगे हैं। चारों तरफ खनाखन की आवाजें आ रही हैं। सराफे में भी रुपये की ऐसी झंकार कम सुनाई देती है। हरेक मास्टर तहसील का चपरासी बना बैठा हुआ है। जिस लड़के का नाम पुकारा जाता है, वह अधयापक के सामने आता है, फीस देता है और अपनी जगह पर आ बैठता है। मार्च का महीना है। इसी महीने में अप्रैल, मई और जून की फीस भी वसूल की जा रही है। इम्तहान की फीस भी ली जा रही है। दसवें दर्जे में तो एक-एक लड़के को चालीस रुपये देने पड़ रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

"आज के दिन जन्मे थे "गोदान" के लेखक मुंशी प्रेमचंद". पत्रिका समाचार समूह. ३१ जुलाई २०१४. अभिगमन तिथि ३१ जुलाई २०१४.

"अपनी कृतियों की रूपरेखा" (पीएचपी). जागरण याहू. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

"प्रेमचंद मुंशी कैसे बने" (एचटीएम). अभिव्यक्ति. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

"Premchand's Novels" (एचटीएमएल) (अंग्रेज़ी में). विश्वबुक. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

"मुंशी प्रेमचंद लेखन दुनिया के एक नयाब हिरा।". गुरूजी इन हिंदी. अभिगमन तिथि 2019-11-21.

"गबन" (पीएचपी). भारतीय साहित्य संग्रह. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 15

बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५६.

"LITERATURE BY MUNSHIPREMCHAND" (एचटीएम) (अंग्रेज़ी में). हिन्दी बुक्स. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

"PREMCHAND AND COMPOSITE CULTURE" (पीएचपी) (अंग्रेज़ी में). सेंटर फ़ार स्टडी ऑफ़ सोसायटी एंड सेक्युलरिज़्म. अभिगमन तिथि 30 जून 2008.

ISSN (Online) : 2348 - 2001

International Refereed Journal of Reviews and Research

Volume 7 Issue 2 March 2019

International Manuscript ID : 23482001V7I2032019-16

(Approved and Registered with Govt. of India)

"PREM CHAND WRITER" (पीएचपी) (अंग्रेज़ी में). इंडियन पोस्ट.कॉम. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.

"प्रेमचंद संचयन" (पीएचपी). भारतीय साहित्य संग्रह. अभिगमन तिथि 26 जून 2008.

"सौत". विकिस्रोत. अभिगमन तिथि 26 जून 2008.

"कफ़न". विकिस्रोत. अभिगमन तिथि 26 जून 2008.

सिंह, डॉ॰बच्चन (1972). प्रतिनिधि कहानियाँ. वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी, चौक. पृ॰ 9.

'"प्रेमचंद की विरासत असली विरासत है"' (एसएचटीएमएल). बीबीसी. अभिगमन तिथि 9 जून 2008.

यह उपन्यास उर्दू साप्ताहिक 'आवाजे खल्क' में 8 अक्टूबर 1903 से 1 फ़रवरी 1905 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक का नाम छपा था- मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी। बाद में स्वयं प्रेमचंद ने इसका हिन्दी तर्जुमा 'देवस्थान रहस्य' नाम से किया, जो उनके पुत्र अमृतराय द्वारा उनके आरंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचारण' में संकलित है।